दिसम्बर २०१२

क़ीमत रु १२/-

जैन भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

आड़ाई

सरलता

आड़ाई सरलता

संपादकीय

बालमित्रो,

कई बार ऐसा होता है कि कोई हमें अच्छी सलाह दे फिर भी हम उसे मानते नहीं और हमें जो करना होता है, वही करते हैं, बात-बात में जिद करते हैं, बोलना बंद कर देना, वगैरह सब आड़ाई कहलाता है। आड़ाई करने से लोगों को अपने साथ अच्छा नहीं लगता, परेशान हो जाते हैं। जो सरल होता है उसके साथ सभीको अच्छा लगता है।

इस अंक में परम पूज्य दादाश्री ने, आड़ाई किसे कहते हैं, उसका परिणाम और उसमें से कैसे निकलें, सरलता किसे कहते हैं, आदि की सुंदर समझ दी है।

तो चलो, हम भी आड़ाई और सरलता के स्वरूप को पहचानें और सरलता की ओर जाने का प्रयत्न करें।

- डिम्पल मेहता

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक: ८
अखंड क्रमांक: ८
दिसम्बर -२०१२

संपर्कसूत्र
वालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh
Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपयें
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाश्री कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : आड़ाई यानी क्या?

दादाश्री : आड़ाई मतलब रात को किसी के साथ तुम्हारा झगड़ा हुआ हो और सुबह वह तुमसे बात करने आए तो तुम बात नहीं करते और कहो कि, "तेरे साथ बात नहीं करूँगा" और फिर अड़ जाते हो। अरे भाई, रात की बात रात को पूरी हो गई। कल शनिवार था, आज तो रविवार है। पर शनिवार की बात रविवार को खींच लाएँ, उसे आड़ाई कहते हैं।

जो भूल मालूम नहीं पड़े और उसे ढकें, वह बात अलग है। लेकिन जो भूल मालूम पड़ती हो और उसे ढकें, उसका रक्षण करें, वह सबसे बड़ी आड़ाई। उदा. तुम्हारा तुम्हारे मित्र के साथ झगड़ा हुआ और तुमने उसे पीट दिया। तुम्हें मन में लगेगा कि यह गलत हो गया, पर जब कोई कहेगा कि "क्यों मारा", तो तुम कहोगे कि "इसे तो मारना ही चाहिए", यह आड़ाई!

प्रश्नकर्ता : इतनी सरलता उत्पन्न होनी चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, तुम कहीं दूसरे शहर जाओ और तुम गाड़ी में बैठे। तभी तुमसे कहें कि "गोदी में बैठ जाओ, जगह नहीं है।" फिर तुमसे थोड़ी देर में कहे कि "तुम उतर जाओ, ठीक नहीं लग रहा, तुम्हें कल ले जाएँगे।" थोड़ी दूर जाने के बाद फिर तुम्हें बुलाएँगे। अभी तो तुम बैठने ही जा रहे थे कि कोई और आ जाता है तो फिर तुमसे कहते हैं, "कल ले जाएँगे।" ऐसे सात बार चढ़ाएँ-उतारें, तब भी ज़रा-सी भी अकुलाहट न हो, तब समझना कि सरल हो गए।

अब ऐसे समय मुँह फूल गया तो चलेगा, लेकिन अंदर भाव नहीं बिगड़ने चाहिए। हठ करने लगो, ऐसा नहीं होना चाहिए। कहोगे कि अब जाना ही नहीं है, ऐसा नहीं होना चाहिए। मुँह भले फूला हुआ हो, बिगड़ी हुई कढ़ी जैसा, लेकिन हठ नहीं करनी चाहिए। आड़ाई पर नहीं उतरना चाहिए। आड़ाई हमें किसी की सही बात भी नहीं मानने देती।

जो बात-बात में आड़ाई करता है उसे कोई नहीं बुलाता। जिसमें आड़ाई कम होती है उसे सब बुलाते हैं। आड़ाई कबूल करने से ही जाती है। साथ में प्रतिक्रमण करें तो चली जाती है। जो सरल हुआ वह मोक्ष के लायक बनता है।

आड़ाई से रह गया...

आज मालव, दर्श और काव्या, मम्मी-पापा के साथ जू जा रहे थे।

बच्चों, पानी की बॉटल, फ्रूट्स, नाश्ता सब पैक कर लिया?

हाँ, मम्मी।

डैडी कार में तैयार बैठे थे। एक के बाद एक सब आते गए और कार में बैठते गए। मालव बैग कँधे पर लेकर, डैडी के साथ आगे की सीट पर बैठने के लिए दौड़ा।

आगे की सीट पर दर्श को देखकर,

दर्श, मुझे आगे बैठना है। तू पीछे जा।

नहीं, मुझे आगे बैठना है।

तुम्हारी इस खींचा-तानी में देर हो जाएगी। एक काम करते हैं, हम बारी रखते हैं। जाते समय एक बैठे और आते समय दूसरे की बारी।

ओ.के. मालव, अभी मैं बैठ रहा हूँ। आते समय तुम बैठना।

नहीं, दोनों बार मैं ही बैठूँगा, वर्ना मुझे नहीं आना।

मालव, जिद करके सबका मूड क्यों बिगाड़ रहा है? ऐसा करने में तुझे मज़ा आता है? मान जा न!
पर मालव टस से मस नहीं हुआ।
ठीक है मालव, अभी तू बैठ, मैं बाद में बैठूँगा।
नहीं, दोनों बार मैं ही बैठूँगा। वर्ना मुझे नहीं आना।
तो तू यहीं रह। हम जा रहे हैं।
कुछ बोले बिना मालव घर आ गया और सोफे पर बैठ गया। कार के जाने की आवाज़ पर मालव ने ध्यान नहीं दिया। उसने फोन लेकर तीन-चार दोस्तों को घुमाया लेकिन कोई नहीं मिला।
थोड़ी देर बाद उसने अपनी फेवरिट म्यूजिक की सी.डी. लगाई। पर म्यूजिक में उसे मज़ा नहीं आया। उसे खूब बैचेनी हो रही थी।
वे लोग ज़ू में कैसे मज़े कर रहे होंगे?
अक्रम एक्सप्रेस
दिसम्बर २०१२

टाइम पास करने के लिए मालव ने बुक्स, गेम्स, टी.वी. सब आज़मा लिया, लेकिन कहीं भी उसका चित्त नहीं लगा।
रात के नौ बजे मालव को दर्श और काव्या के हँसने की आवाज़ सुनाई दी। जू की बातें करते-करते उन्होंने दरवाज़ा खोला। फटाफट मालव ने एक कॉमिक बुक हाथ में ली और पढ़ने का ढोंग करने लगा।
मालव, जू में बहुत मजा आया। तूने यों ही गँवा दिया। चल मैं तुझे सब फोटो बताता हूँ।
मुझे जू के फोटो देखने का मन नहीं है। मैंने भी यहाँ मेरे दोस्तों के साथ बहुत मज़े किए।
दूसरे दिन सुबह नाश्ता करते-करते भी दर्श और काव्या जू की बातें कर रहे थे।
दर्श, वह डांसिंग बतख कितनी अच्छी थी। और वह दो पैर से चलनेवाला हाथी!
लेकिन सबसे अच्छा तो बंदर का शो (खेल) था।
दिसम्बर २०१२
अक्रम एक्सप्रेस

मालव ध्यान से उनकी बातें सुन रहा था, लेकिन दिखावा ऐसा कर रहा था जैसे उसे बिल्कुल रूचि न हो।
मालूम है, बंदर के रखवाले ने मुझसे एक बात कही। जंगल में से बंदर को पकड़ने के लिए वे एक बॉक्स में, बंदर का हाथ जाए उतना छोटा छेद करके वहाँ एक केला लटकाते हैं। बंदर केला लेने के लिए हाथ अंदर डालता है। पर केला हाथ में पकड़ने से मुट्ठी बन जातीं है, इसलिए छेद में से हाथ बाहर नहीं निकाल सकता और पकड़ा जाता है। अब छूटने के लिए उसे एक छोटा-सा केला ही छोड़ना होता है, पर जिद्दी बंदर इतनी छोटी सी चीज़ नहीं छोड़ सकते और पकड़े जाते हैं।
बंदर कितने पागल होते हैं!
दर्श की बात सुनकर मालव को भी हँसी आ गई।
मैंने भी तो बंदरों जैसा ही काम किया न! आगे की सीट पर बैठने के लिए जिद की। बारी-बारी से बैठनेवाली पापा की बात नहीं सुनी और मनमानी करके आड़ाई की। अंत में बंदर की तरह सारे दिन घर में बंद बैठा रहा और जू का मज़ा गँवाया।
मालव को अपनी भूल समझ में आई।
अरे, मालव कहाँ खो गया?
कहीं नहीं, तू मुझे जू के फोटो कब दिखाएगा?
५
अक्रम एक्सप्रेस
दिसम्बर २०१२

सामनेवाले की बात सही
हो फिर भी न मानें
और अपनी मनमानी
करें उसे आड़ाई कहते हैं।

यह तो न

मोक्ष में जाना हो तो सीधा होना पड़ेगा। उल्टे चलेंगे तो नहीं जा सकते। साँप को भी बिल में जाने के लिए सीधा होना पड़ता है, अगर वह उल्टा सीधा चलेगा तो बिल में नहीं जा सकेगा।

हम जितने सरल
होंगे उतना ज्ञानी
का राजीपा प्राप्त
होगा, ज्ञानी हम
से राज़ी होंगे।

ई ही बात है!

जैसा मोड़ें वैसे मुड़ जाए,
उसे सरल कहते हैं।
उदा. एक बार कहा जाए कि
बिना पूछे किसीकी चीज़
नहीं लेते, तो हमेशा वह
किसीकी चीज़ पूछकर ही
ले उसे सरलता कहते हैं।

सरलता की कमाई

शाम से मूसलधार बारिश हो रही थी। घर पर सब खा-पीकर बैठे थे। मम्मी रसोई का काम पूरा कर रहीं थीं और पापा रोज़ की तरह मेगेज़ीन लेकर कुर्सी में बैठे थे। आर्या और मोर्या भी कहानी सुनने के लिए दादी माँ के पास आकर बैठीं थी। दादी माँ मतलब नई-नई कहानियों का खज़ाना।

दादी ने कहानी शुरू की

गंगा नदी, हिमालय से प्रकट होकर ऋषिकेश, हरिद्वार, काशी आदि शहरों में बहती हैं। इन स्थानों पर बहुत सारे साधु संत भी रहते हैं और वे गंगाजी के किनारे साधना किया करते हैं।

गंगा नदी के ऐसे ही एक किनारे पर एक साधु की झोंपड़ी थी। वह साधु रोज़ सुबह जल्दी उठकर गंगा नदी में स्नान करके पूजा-अर्चना करते थे। साधु जब स्नान करते तब पेड़ों की मोटी डाली और तने उनके शरीर से टकराते या उनके आसपास से बह जाते। एक बार उन साधु ने गंगा नदी से पूछा, "गंगाजी, मैंने देखा है कि आपके प्रवाह में मोटी-मोटी डाली और पेड़ के तने ही बहते हैं। छोटे पौधे और घास के तिनके तो कभी-कभी ही देखने को मिलते हैं! ऐसा क्यों?"

यह सुनकर गंगाजी मुस्कराई। उन्होंने कहा, "मैं जब हिमालय में से प्रकट होती हूँ, तब मेरा प्रवाह बहुत ही वेगवान और तीव्र होता है। पर्वत की पोखरों में और गड्ढों में बड़े पेड़ होते हैं। मेरे इन प्रवाह को झेलने में वे समर्थ नहीं है फिर भी वे अपना स्थान छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अपनी पकड़ नहीं छोड़ते और वहीं खड़े रहने का आग्रह रखते हैं। परिणामतः मेरे तेज प्रवाह में वे टूट जाते हैं और बह जाते हैं लेकिन घास और पौधे कोई पकड़ नहीं पकड़ते। वे सरल होते हैं। मैं जैसे मोड़ू वैसे मुड़ जाते हैं। मेरे प्रवाह के सामने झुक जाते हैं। इस कारण से वे बच जाते हैं।"

गंगाजी की ऐसी वाणी सुनकर साधु को संतोष हुआ और वह अपनी साधना में मग्न हो गए।

कहानी पूरी हो गई इसलिए दादी ने कहा, "नम्रता और सरलता ये बहुत ऊँचे गुण हैं। सभी को ये गुण प्रभावित करते हैं। "कहानी सुनते-सुनते मोर्या को तो नींद आ गई, पर दादी माँ की यह कहानी आर्या को बहुत ही छू गई।

दूसरे दिन आर्या स्कूल से आई तब बहुत खुश थी। स्कूल बैग रूम में रखकर, एकदम दादी माँ से लिपट गई। "दादी, एक बैंड में ड्रम्स बजाने के लिए हमारे स्कूल में सिलेक्शन होनेवाला है। अगर मुझे इस बैंड में ड्रम्स बजाने का चान्स मिल जाए, तो मज़ा आ जाए।

"खूब मन लगाकर प्रैक्टिस करना बेटा, ज़रूर तुझे चान्स मिलेगा" दादी ने आर्या को प्रोत्साहित करते हुऐ कहा। बर्थ डे गिफ्ट में मिले हुऐ ड्रम को आर्या बहुत सँभालकर रखती थी। उसी शाम से आर्या प्रैक्टिस करने लगी।

"आर्या मुझे डिस्टर्ब हो रहा है। लिविंग रूम में जाकर तेरी प्रैक्टिस कर", मोर्या ने चिढ़कर आर्या से कहा।

लिविंग रूम में पापा डिस्टर्ब हुए, इसलिए उन्होंने आर्या से बाहर जाकर बजाने को कहा। थोड़ा भी चिढ़े बिना आर्या ड्रम लेकर बाहर प्रैक्टिस करने लगी। पर वहाँ सुशीला आंटी ने आर्या को आवाज़ लगाई, "आर्या आवाज़ बंद कर। मेरी तबियत अच्छी नहीं है। सोने दे मुझे।"

ऐसे उस दिन आर्या से बिल्कुल प्रैक्टिस नहीं हो पाई। और ऐसा बहुत दिनों तक चला। किसी भी जगह आर्या प्रैक्टिस करने जाए, वहाँ कोई न कोई तो डिस्टर्ब होता ही था। कभी मोर्या डिस्टर्ब होती तो कभी पड़ोसी। वे लोग उसे दूसरी जगह प्रैक्टिस करने के लिए कहते। आर्या नम्रता से सभी की बात मान लेती। दादी माँ की कही हुई सरलता की बात आर्या को इतनी स्पर्श कर गई थी कि वह कभी एक

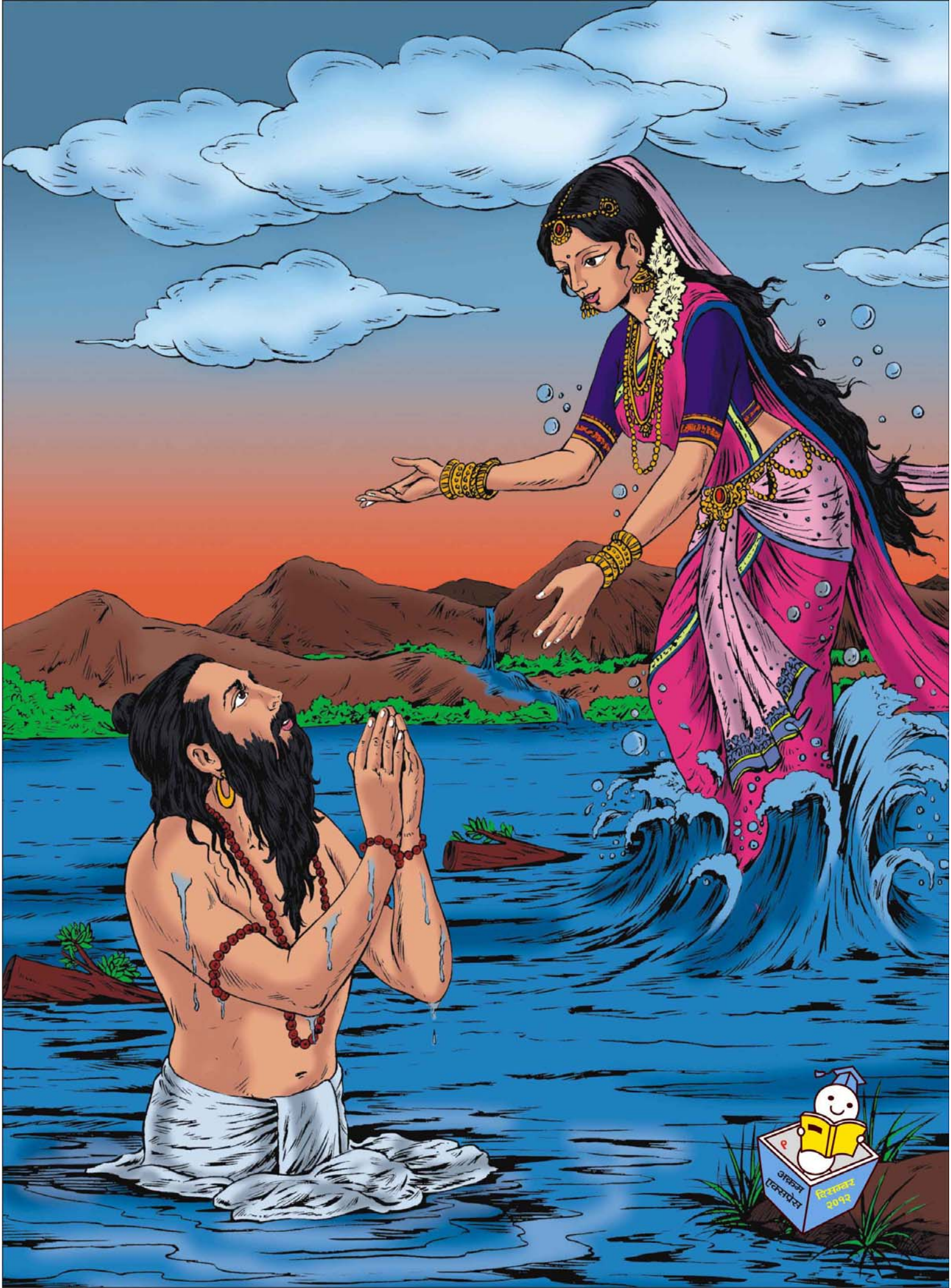

१
अक्रम एक्सप्रेस
दिसम्बर २०१२

जगह प्रैक्टिस करने की जिद नहीं करती।

प्रोफ़ेसर त्रिपाठी आर्या के पड़ोसी थे। वे आर्या की ऐसी सरलता से बहुत ही प्रभावित हुए। आर्या की लगन देखकर, उन्होंने आर्या की मदद करने का निश्चय किया। उस रात उन्होंने एक प्लान बनाया।

"आर्या मेरे पास एक आइडिया है। जिससे तू प्रैक्टिस भी कर सकती है और कोई डिस्टर्ब भी नहीं होगा", प्रोफ़ेसर ने आर्या से कहा।

"सचमुच सर? किस तरह?" आर्या ने उत्सुक्ता से पूछा।

प्रोफ़ेसर ने आर्या को समझाया, "देख, तुझे तो मालूम है कि आवाज़ हवा के माध्यम द्वारा एक जगह से दूसरी जगह जाती है। लेकिन यदि हम एक स्पेस बबल बनाएँ, जिसमें से एक पम्प द्वारा हवा खींच कर वैक्यूम क्रिएट करें, तो तू इस स्पेस बबल में बैठकर आराम से प्रैक्टिस कर सकती है और बाहर किसी को डिस्टर्ब भी नहीं होगा।"

"सुपर्ब आइडिया है सर!" आर्या ने खूब खुशी से कहा। प्रोफ़ेसर और आर्या ने मिलकर एक स्पेस बबल बनाया, जिसमें बैठकर आर्या घंटों प्रैक्टिस करने लगी।

जिस दिन आर्या का बैंड में सिलेक्शन हुआ, उसकी खुशी का पार नहीं था। कूदती-कूदती वह घर आ रही थी। सभीको यह खुशखबरी देने के लिए वह बहुत आतुर थी। उसने देखा तो घर के दरवाज़े के पास ही दादी को प्रोफ़ेसर त्रिपाठी के साथ बात करते हुए देखा। वह दौड़ती-दौड़ती आई और प्रोफ़ेसर त्रिपाठी के पैरों में गिर गई, "सर, बैंड में मेरा सिलेक्शन हो गया है। आपके मार्गदर्शन के बिना मुझे यह दिन देखने को नहीं मिलता। सचमुच आपकी बहुत आभारी हूँ।"

आर्या के सिर पर हाथ रखकर प्रोफ़सर ने कहा, "आर्या, इस सिलेक्शन का श्रेय मेरे मार्गदर्शन को नहीं, लेकिन तेरी लगन और सरलता को जाता है, यह सरलता सँभालकर रखना। यह सरलता तेरी बहुत बड़ी कमाई है। यह जीवन में तेरी प्रगति का कारण बनेगी।"

और वह दादी से लिपट गई।

"नम्रता और सरलता
ये बहुत ऊँचे गुण हैं।
सभी को ये गुण
प्रभावित करते हैं।"

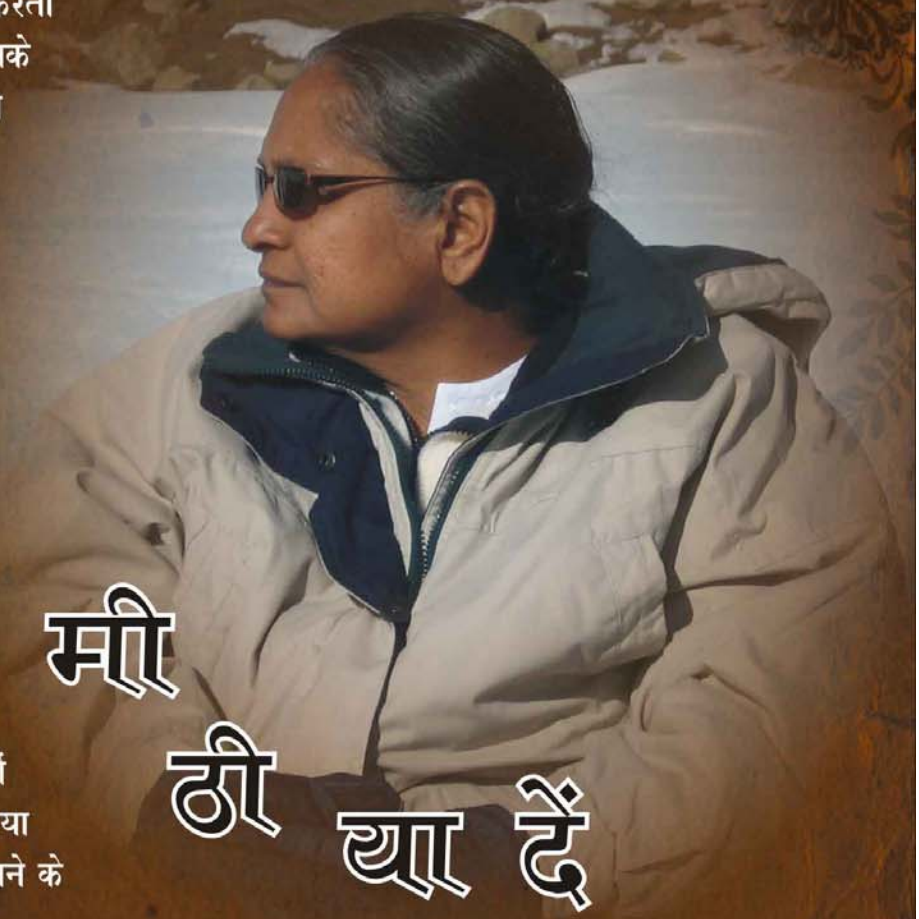

मीठी या दें

नीरू माँ रोज़ सुबह वात्सल्य में योगा करतीं थीं। सभी ब्रह्मचारी भाई शुरूआत से ही उनके साथ योगा में होते थे और अंत में जब प्राणायम होता था तब सभी ब्रह्मचारी बहनों का आना होता था। इस तरह की सेटिंग थी।

सर्दियों के दिन थे। रोज़ योगा होते थे। दो ब्रह्मचारी बहनों को रोज़ उठने में देर हो जाती थी इसलिए वे उठकर फटाफट प्राणायम करने के लिए भागती थीं। जल्दी में स्वेटर पहनना भूल जाती थीं। तीन-चार दिन लगातार ऐसा हुआ इसलिए नीरु माँ ने एक-दो दिन बाद अलग-अलग समय पर दोनों बहनों को खुद अपने पास बुलाकर पूछा, "तुम लोगों को जैकेट चाहिए?" दोनों ने जवाब दिया, "नहीं हमारे पास हैं।" उन बहनों को ख्याल नहीं आया कि सुबह प्राणायम के समय स्वेटर नहीं पहनने के कारण नीरु माँ ऐसा पूछ रहीं हैं।

उसके बाद फिर तीन-चार दिन ऐसा ही चला। इसलिए नीरु माँ ने एक आप्तपुत्री बहन को बुलाकर कहा, "तुम इन दोनों से पूछना कि इनके पास स्वेटर हैं न? वे लोग संकोच रखती हैं, इसलिए मेरे पास से नहीं लेतीं। लेकिन रोज़ सुबह आती हैं तब जैकेट नहीं पहनती। कितनी सर्दी है तो भी स्वेटर पहने बिना आती हैं। अतः तुम उनसे पूछकर देखना।"

दूसरे दिन आप्तपुत्री बहन ने उन बहनों से जाकर पूछा, "तुम्हें स्वेटर चाहिए?" उन्होंने फिर से मना किया तब आप्तपुत्री बहन ने उन्हें समझाया, जब तुम रोज़ प्राणायम में आती हो तब स्वेटर क्यों नहीं पहनती? नीरु माँ रोज़ पूछतीं हैं कि इन दोनों के पास स्वेटर नहीं है ऐसा लगता है, तो अपने स्टॉक में से दे दें। नीरु माँ को ऐसा लगता है कि तुम्हें संकोच होता है इसलिए आज उन्होंने मुझे भेजा है।

वह दोनों बहनें खूब हँसने लगी, हमें तो उठने में बहुत देर हो जाती है इसलिए सीधे दौड़कर आ जाते हैं उसमें जैकेट पहनना याद ही नहीं रहता। और सर्दियाँ तो अभी शुरू हुई हैं, अभी तो हमने स्वेटर बैग में से निकाले ही नहीं। नीरु माँ से कहना कि चिंता न करें।

और उसी दिन उन्होंने सभी स्वेटर निकाल लिए। ४-५ स्वेटर थे। दूसरे दिन से वे रोज अलग-अगल स्वेटर पहनकर सुबह प्राणायम में जाने लगी जिससे नीरु माँ को मालूम हो जाए, उनके पास स्वेटर हैं।

योगा में ब्रह्मचारी भाई-बहनें और महात्मा, इतने लोगों के होते हुए भी नीरु माँ का ध्यान एक-एक व्यक्ति की तरफ़ रहता था और वे सभी का बहुत ध्यान रखती थीं।

ऐसी थीं अपनी वात्सल्यमूर्ति नीरु माँ!

अपने आप की जाँच करके देखें

आड़ा

१. मोड़ें वैसे मुड़ जाए उसे ---------- कहते हैं (३)

२. आड़ाई कबूल करने से जाती है। साथ ही ---------- करें तो जाती है। (५)

खड़ा

३. भूल मालूम हो और ---------- करे यह सबसे बड़ी आड़ाई (३)

४. सामनेवाले की सही बात हो, फिर भी न माने और अपने ---------- से चले, उसे आड़ाई कहते हैं। (२)

चलो खेलें

१ प्रश्नवाचक चिन्ह के सामने, A से E तक में से कौन-सी आकृति रखी जा सकती है?

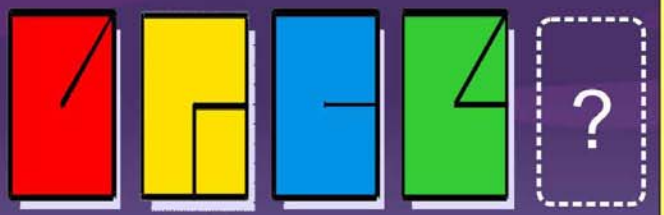

२ जोड़ी बनाओ।

३

खाली खाने इस तरह भरो ताकि हर एक आड़ी लाइन, खड़ी लाइन या ३*३ के ब्लोक में १ से ९ तक के सभी नंबर आ जाएँ।

2		5			7			6
4			9	6			2	
				8			4	5
9	8			7	4			
5	7		8		2		6	9
			6	3			5	7
7	5			2				
	6			5	1			2
3			4			5		8

४

रास्ता ढूँढो।

५

दिए गए चित्र में से 8 ढूँढो।

9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999998999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999
9999999999999999999999999999999999

६

खरगोश का चित्र बनाओ।

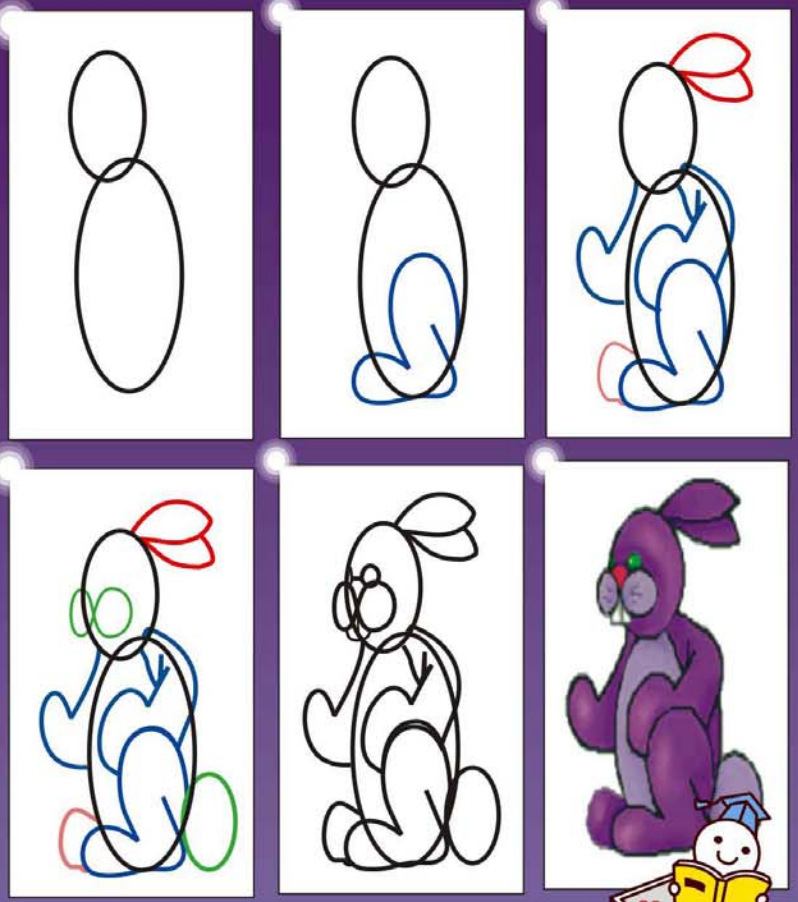

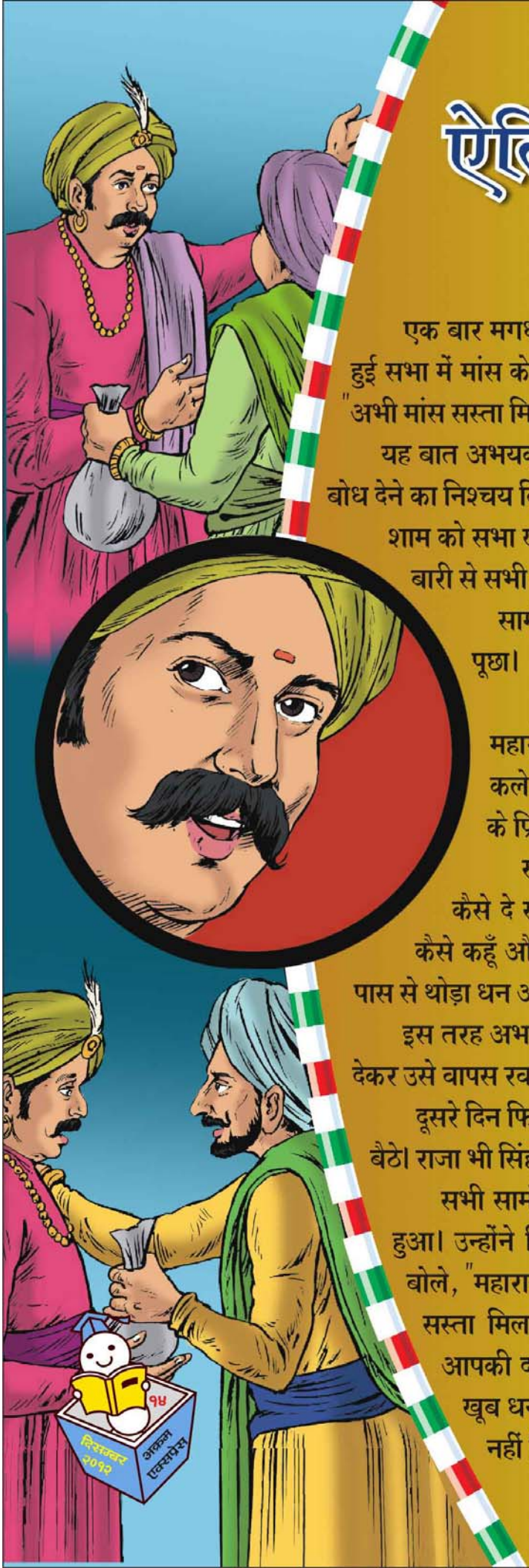

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

एक बार मगध देश के राजा श्रेणिक सभा में बैठे हुए थे। सामंतों से भरी हुई सभा में मांस के विषय पर चर्चा होने लगी। मांसाहार प्रिय सामंतों ने कहा, "अभी मांस सस्ता मिल रहा है।"

यह बात अभयकुमार ने सुनी। उन्होंने उन हिंसक सामंतों को जीवदया का बोध देने का निश्चय किया।

शाम को सभा खत्म हुई। राजा महल में गए। उसके बाद अभयकुमार बारी-बारी से सभी मांस प्रिय सामंतों के घर गए।

सामंतों ने कौतुहलवश अभयकुमार से घर आने का कारण पूछा।

अभयकुमार ने कहा : महाराजा श्रेणिक को अचानक महारोग हो गया है। राजवैद्य कहते हैं कि, "कोमल मनुष्य के कलेज़े का सवा टका भार मांस हो तो रोग मिटेगा। आप राजा के प्रिय हो, इसलिए आपके यहाँ से यह मांस लेने आया हूँ।"

सामंत ने सोचा कि, "कलेज़े का मांस मैं मेरे मरने से पहले कैसे दे सकता हूँ? पर यह तो राजा के लिए माँगा गया है, ना भी कैसे कहूँ और हाँ भी कैसे कहूँ? धर्म संकट में पड़े हुए सामंत ने अपने पास से थोड़ा धन अभयकुमार को देकर राजा से यह बात नहीं बताने कहा।

इस तरह अभयकुमार जिस -जिसके घर गए, सभी ने मांस के बदले धन देकर उसे वापस रवाना कर दिया।

दूसरे दिन फिर सभा हुई तब सभी सामंत अपने-अपने आसन पर आकर बैठे। राजा भी सिंहासन पर बिराजमान हुए।

सभी सामंत राजा के कुशल समाचार पूछने लगे। राजा को अचरज हुआ। उन्होंने विस्मय से अभयकुमार के सामने देखा। तब अभयकुमार बोले, "महाराज! कल आपके सामंतों ने सभा में कहा था कि अभी मांस सस्ता मिल रहा है, इसलिए मैं उनके यहाँ उनके कलज़े का मांस आपकी दवाई के लिए लेने गया था। मांस के बदले में सभी ने मुझे खूब धन दिया, लेकिन किसी ने मुझे कलेज़े का सवा पैसाभर मांस नहीं दिया। तब फिर यह मांस सस्ता है या महँगा?"

यह सुनकर सभी सामंतों का सिर शर्म से नीचे झुक गया। कोई कुछ बोल न सका। अभयकुमार ने कहा, "यह मैंने तुम्हें दुःख देने के लिए नहीं किया था। परंतु बोध देने के लिए किया था। हमे अपना शरीर का मांस देना पड़े तो बहुत भय लगता है, क्योंकि अपने शरीर पर हमें बहुत मोह है। वैसे ही बाज़ार में भी किसी जीव का ही मांस होगा। उसे भी अपना जीव प्यारा होगा। हम धन दौलत देकर भी अपना जीव बचाते हैं। पर वे बेचारे क्या करें? हम समझदार, बोलते-चलते प्राणी हैं। वे बेचारे गूंगे और नासमझ प्राणी। उनका मांस खाने के लिए हम उन्हें मृत्यु का दुःख देते हैं वह कितना भयंकर पाप कहलाता है। हमें यह निरंतर लक्ष्य में रहना चाहिए कि सभी प्राणियों को अपना जीव प्यारा होता है और सभी जीवों की रक्षा करने जैसा कोई भी बड़ा धर्म नहीं है।"

अभयकुमार के बोध से श्रेणिक महाराजा को संतोष हुआ, सभी सामंतों ने भी बोध लिया।

सभी ने उस दिन से मांस न खाने की प्रतिज्ञा की। क्योंकि वह अभक्ष्य है। किसी भी जीव को मारे बिना वह आ ही नहीं सकता, इसलिए यह सबसे बड़ा अधर्म है।

"हमें यह निरंतर लक्ष्य में रहना चाहिए कि सभी प्राणियों को अपना जीव प्यारा होता है और सभी जीवों की रक्षा करने जैसा कोई भी बड़ा धर्म नहीं है।"

अपने आप की जाँच करके देखें

आड़ा : १. सरल २. प्रतिक्रमण
खड़ा : ३. रक्षण४. मत

१

४ -१,३

चलो खेलें....

२ १-D, २-E,
३-B,४-A,५-C.

३

2	3	5	1	4	7	9	8	6
4	1	8	9	6	5	7	2	3
6	9	7	2	8	3	1	4	5
9	8	6	5	7	4	2	3	1
5	7	3	8	1	2	4	6	9
1	4	2	6	3	9	8	5	7
7	5	9	3	2	8	6	1	4
8	6	4	7	5	1	3	9	2
3	2	1	4	9	6	5	7	8

१ नीचे दिए गए चित्र में से आकृत्ति ढूँढ निकालो।

२ नीचे दिए गए चित्र में कितनी सीढ़ियाँ हैं?

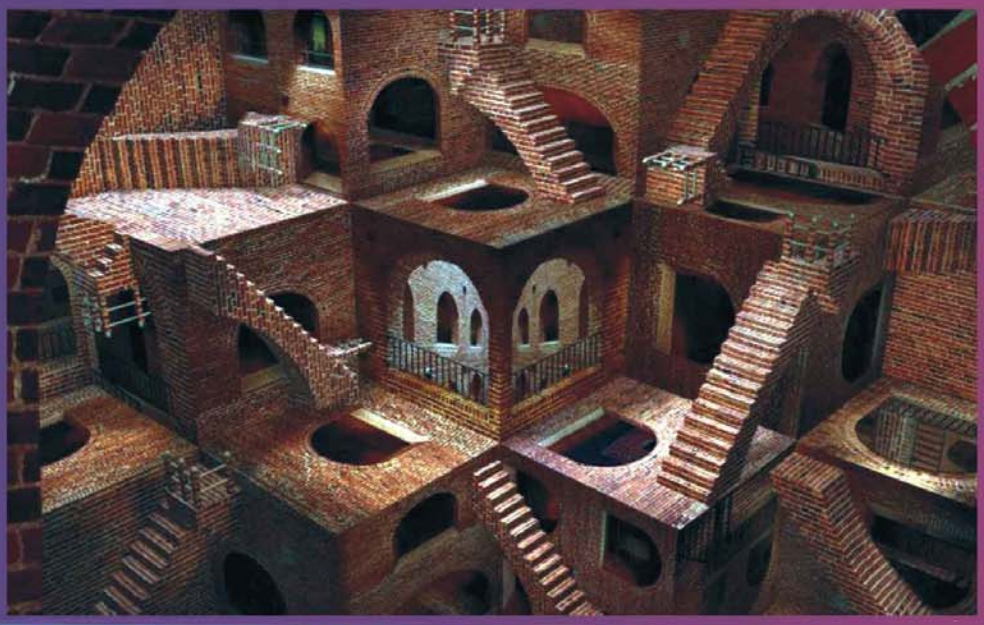

३ नीचे दिए गए चित्र में से कितने त्रिकोणा हैं, ढूँढ निकालो।

कॉलाज वर्क स्पर्धा के परिणाम

मित्रों,

"कॉलाज वर्क स्पर्धा" में हिस्सा लेनेवाले सभी बच्चों को बहुत-बहुत बधाई! सभी के प्रयत्न प्रशंसनीय हैं। विजेताओं को उनके इनाम घर पर ही पहुँचा दिए जाएँगे। आशा है, ऐसे ही आप सभी स्पर्धा में हिस्सा लेते रहोगे!

१३ से १५ वर्ष

प्रथम इनाम

नाम:
धारा भावसार,
गांधीनगर
उम्र : १३ वर्ष

दूसरा इनाम

नाम :
पटेल केवल
सूरत
उम्र : १५ वर्ष

१० से १२ वर्ष

प्रथम इनाम

नाम :
साक्षी ठक्कर
धोलका
उम्र : १५ वर्ष

Akram Express

December 2012
Year : 1, Issue : 8
Conti. Issue No.: 8

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

पूज्यश्री की आफ्रीका-दुबई यात्रा की झलक

पूज्यश्री की हाजिरी में आरती करते बच्चें

छोटे महात्मा को खिलाते पूज्यश्री

नैरोबी के लिटल एम.एच.टी. के बच्चों द्वारा नाटक

प्रसाद देते हुए पूज्यश्री

केन्या टुर दौरान हाथी को देखते हुए पूज्यश्री

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.